



Boy

04 Apr 2026

05:06 PM

Raipur

Model: Web-MyKundli

Order No: 121821001

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 04/04/2026
दिन _____: शनिवार
जन्म समय _____: 17:06:00 घंटे
इष्ट _____: 27:59:38 घटी
स्थान _____: Raipur
राज्य _____: Chhattisgarh
देश _____: India

अक्षांश _____: 21:16:00 उत्तर
रेखांश _____: 81:42:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:03:12 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 17:02:48 घंटे
वेलान्तर _____: -00:03:01 घंटे
साम्पातिक काल _____: 05:54:00 घंटे
सूर्योदय _____: 05:54:08 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:18:42 घंटे
दिनमान _____: 12:24:33 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वसन्त
सूर्य के अंश _____: 20:29:05 मीन
लग्न के अंश _____: 04:22:46 कन्या

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कन्या - बुध
राशि-स्वामी _____: तुला - शुक्र
नक्षत्र-चरण _____: स्वाति - 4
नक्षत्र स्वामी _____: राहु
योग _____: वज्र
करण _____: वणिज
गण _____: देव
योनि _____: महिष
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: शूद्र
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: सर्प
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: वायु
जन्म नामाक्षर _____: ता-तरुण
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मेष

SHREE DAIVAGYA JYOTISH & VASTU

Raipur Chhattisgarh & Bikaner Rajasthan

9509496711

Pandit Bhawani Shankar Pareek

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1948	चैत्र	14
पंजाबी	संवत : 2082	चैत्र	22
बंगाली	सन् : 1432	चैत्र	20
तमिल	संवत : 2082	पंगुनी	21
केरल	कोल्लम : 1201	मीनम	21
नेपाली	संवत : 2082	चैत्र	21
चैत्रादि	संवत : 2083	वैशाख	कृष्ण 2
कार्तिकादि	संवत : 2083	चैत्र	कृष्ण 2

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 2
तिथि समाप्ति काल _____ : 10:09:17
जन्म तिथि _____ : 3
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : स्वाति
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 21:35:23 घंटे
जन्म योग _____ : स्वाति
सूर्योदय कालीन योग _____ : हर्षण
योग समाप्ति काल _____ : 14:16:55 घंटे
जन्म योग _____ : वज्र
सूर्योदय कालीन करण _____ : गर
करण समाप्ति काल _____ : 10:09:17 घंटे
जन्म करण _____ : वणिज
भयात _____ : 54:12:55
भभोग _____ : 65:26:23
भोग्य दशा काल _____ : राहु 3 वर्ष 0 मा 25 दि

घात चक्र

मास _____ : माघ
तिथि _____ : 4-9-14
दिन _____ : गुरुवार
नक्षत्र _____ : शतभिषा
योग _____ : शुक्ल
करण _____ : तैतिल
प्रहर _____ : 4
वर्ग _____ : गरुड़
लग्न _____ : कन्या
सूर्य _____ : कन्या
चन्द्र _____ : धनु
मंगल _____ : तुला
बुध _____ : कर्क
गुरु _____ : वृश्चिक
शुक्र _____ : धनु
शनि _____ : सिंह
राहु _____ : मकर

SHREE DAIVAGYA JYOTISH & VASTU

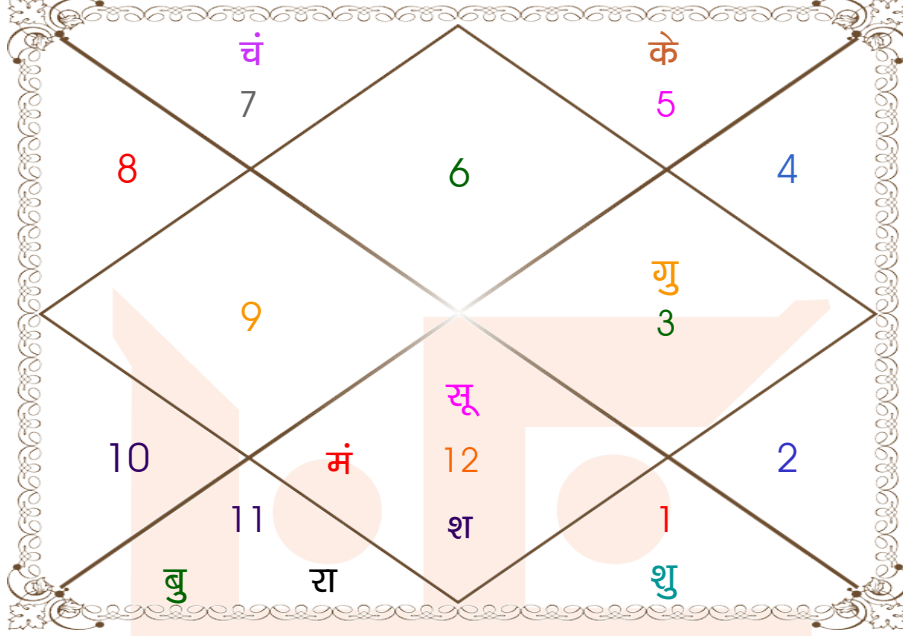
Raipur Chhattisgarh & Bikaner Rajasthan

9509496711

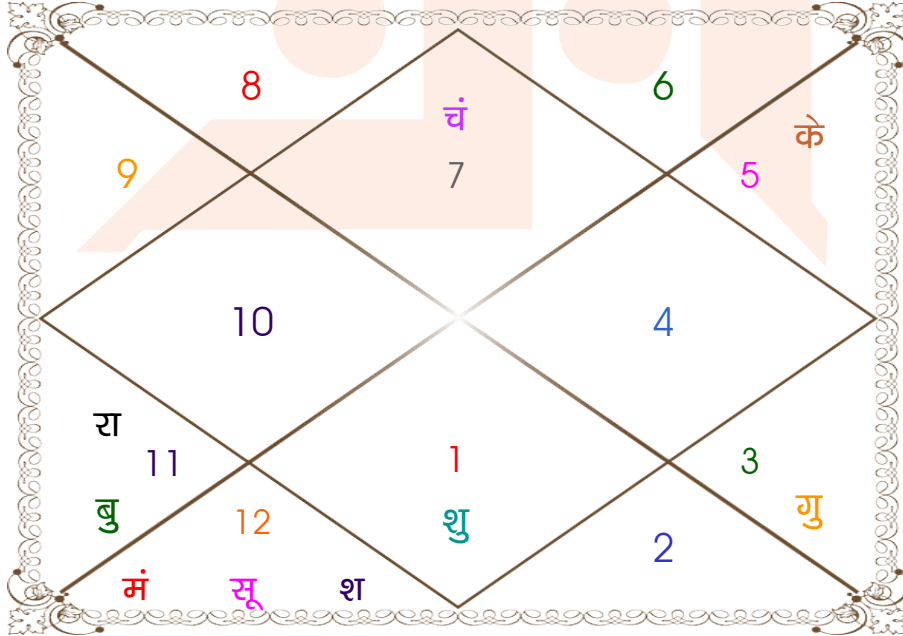
Pandit Bhawani Shankar Pareek

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

श सू मं	शु		गु
रा बु			
			के
		चं	ल

लग्न कुंडली

		मं	श
गु	शु	सू	रा बु
के	ल	चं	

विंशोत्तरी
राहु 3वर्ष 0मा 25दि
राहु

04/04/2026

01/05/2131

राहु	29/04/2029
गुरु	29/04/2045
शनि	29/04/2064
बुध	29/04/2081
केतु	29/04/2088
शुक्र	30/04/2108
सूर्य	30/04/2114
चन्द्र	30/04/2124
मंगल	01/05/2131

योगिनी

पिंगला 0वर्ष 4मा 2दि
पिंगला

04/04/2026

07/08/2026

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	04/04/2026
संकटा	17/07/2026
मंगला	07/08/2026

SHREE DAIVAGYA JYOTISH & VASTU

Raipur Chhattisgarh & Bikaner Rajasthan

9509496711

Pandit Bhawani Shankar Pareek

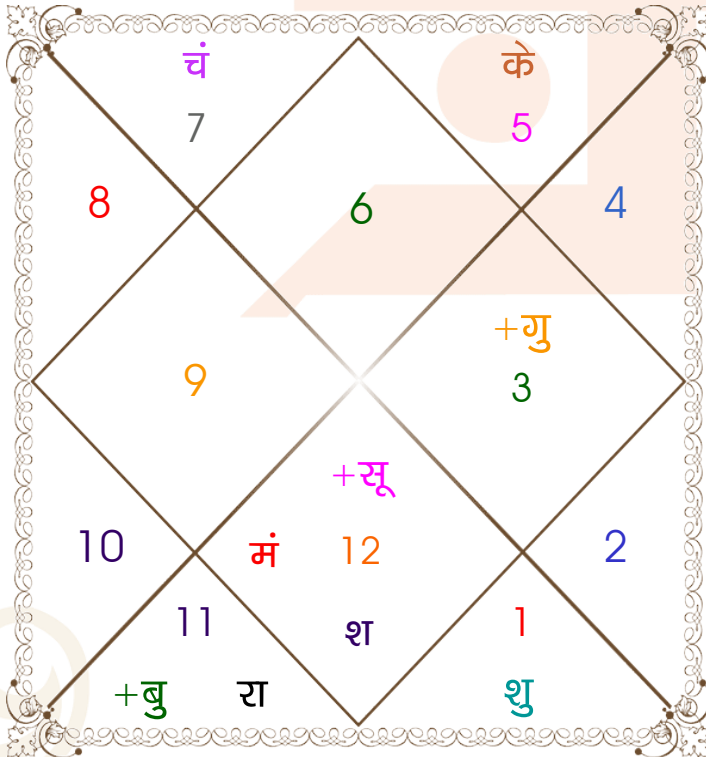
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कन्या	04:22:46	336:37:47	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	शनि	---
सूर्य			मीन	20:29:05	00:59:06	रेवती	2	27	गुरु	बुध	शुक्र	मित्र राशि
चंद्र			तुला	17:43:37	12:09:55	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	सूर्य	सम राशि
मंगल	अ		मीन	01:36:54	00:46:51	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	राहु	मित्र राशि
बुध			कुंभ	22:43:31	01:01:03	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	शनि	सम राशि
गुरु			मिथु	21:47:59	00:04:30	पुनर्वसु	1	7	बुध	गुरु	शनि	शत्रु राशि
शुक्र			मेष	11:42:03	01:13:45	अश्विनी	4	1	मंगल	केतु	बुध	सम राशि
शनि	अ		मीन	11:45:17	00:07:26	उ०भाद्रपद	3	26	गुरु	शनि	चंद्र	सम राशि
राहु	व		कुंभ	14:14:54	00:06:30	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	बुध	मित्र राशि
केतु	व		सिंह	14:14:54	00:06:30	पू०फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि
हर्ष			वृष	04:41:24	00:02:43	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	शनि	---
नेप			मीन	08:06:31	00:02:14	उ०भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	केतु	---
प्लूटो			मक	11:02:40	00:00:53	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	चंद्र	---
दशम भाव			मिथु	04:24:07	--	मृगशिरा	--	5	बुध	मंगल	शुक्र	--

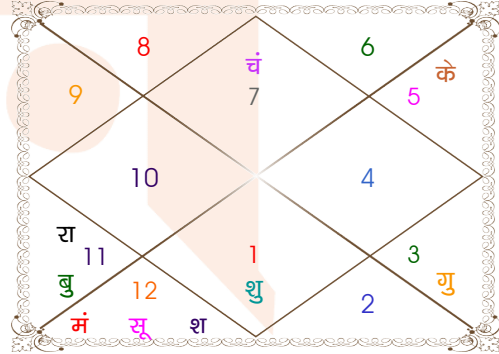
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:13:32

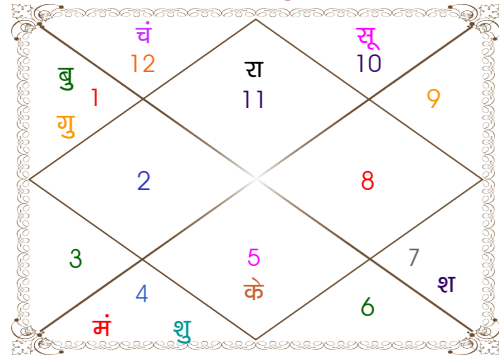
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



SHREE DAIVAGYA JYOTISH & VASTU

Raipur Chhattisgarh & Bikaner Rajasthan

9509496711

Pandit Bhawani Shankar Pareek

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	सिंह 19:22:59	कन्या 04:22:46
2	कन्या 19:22:59	तुला 04:23:13
3	तुला 19:23:26	वृश्चिक 04:23:40
4	वृश्चिक 19:23:53	धनु 04:24:07
5	धनु 19:23:53	मकर 04:23:40
6	मकर 19:23:26	कुम्भ 04:23:13
7	कुम्भ 19:22:59	मीन 04:22:46
8	मीन 19:22:59	मेष 04:23:13
9	मेष 19:23:26	वृष 04:23:40
10	वृष 19:23:53	मिथुन 04:24:07
11	मिथुन 19:23:53	कर्क 04:23:40
12	कर्क 19:23:26	सिंह 04:23:13

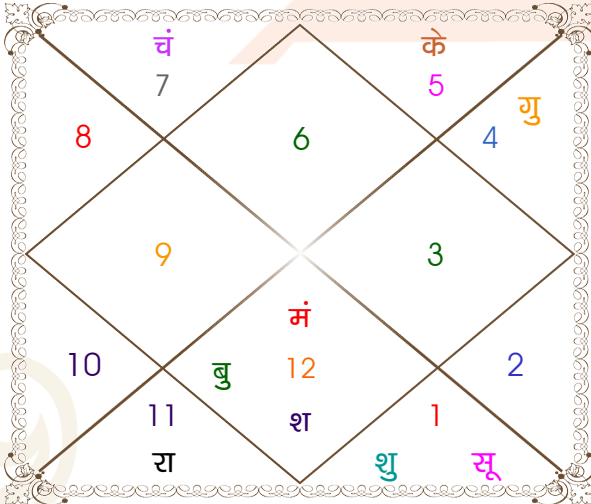
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कन्या	04:22:46
2	तुला	03:27:35
3	वृश्चिक	03:51:28
4	धनु	04:24:07
5	मकर	04:53:55
6	कुम्भ	05:14:12
7	मीन	04:22:46
8	मेष	03:27:35
9	वृष	03:51:28
10	मिथुन	04:24:07
11	कर्क	04:53:55
12	सिंह	05:14:12

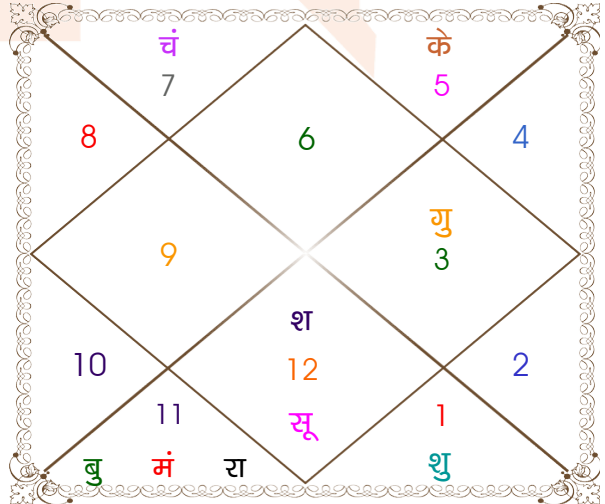
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा
शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : राहु 3 वर्ष 0 मास 25 दिन

राहु 18 वर्ष 04/04/2026 29/04/2029	गुरु 16 वर्ष 29/04/2029 29/04/2045	शनि 19 वर्ष 29/04/2045 29/04/2064	बुध 17 वर्ष 29/04/2064 29/04/2081	केतु 7 वर्ष 29/04/2081 29/04/2088
00/00/0000	गुरु 17/06/2031	शनि 02/05/2048	बुध 25/09/2066	केतु 25/09/2081
00/00/0000	शनि 29/12/2033	बुध 10/01/2051	केतु 23/09/2067	शुक्र 25/11/2082
00/00/0000	बुध 04/04/2036	केतु 19/02/2052	शुक्र 24/07/2070	सूर्य 02/04/2083
00/00/0000	केतु 11/03/2037	शुक्र 20/04/2055	सूर्य 30/05/2071	चंद्र 01/11/2083
00/00/0000	शुक्र 10/11/2039	सूर्य 01/04/2056	चंद्र 28/10/2072	मंगल 29/03/2084
04/04/2026	सूर्य 29/08/2040	चंद्र 01/11/2057	मंगल 26/10/2073	राहु 17/04/2085
सूर्य 11/10/2026	चंद्र 29/12/2041	मंगल 11/12/2058	राहु 14/05/2076	गुरु 24/03/2086
चंद्र 11/04/2028	मंगल 04/12/2042	राहु 16/10/2061	गुरु 20/08/2078	शनि 03/05/2087
मंगल 29/04/2029	राहु 29/04/2045	गुरु 29/04/2064	शनि 29/04/2081	बुध 29/04/2088

शुक्र 20 वर्ष 29/04/2088 30/04/2108	सूर्य 6 वर्ष 30/04/2108 30/04/2114	चंद्र 10 वर्ष 30/04/2114 30/04/2124	मंगल 7 वर्ष 30/04/2124 01/05/2131	राहु 18 वर्ष 01/05/2131 00/00/0000
शुक्र 29/08/2091	सूर्य 17/08/2108	चंद्र 01/03/2115	मंगल 26/09/2124	राहु 11/01/2134
सूर्य 29/08/2092	चंद्र 16/02/2109	मंगल 30/09/2115	राहु 14/10/2125	गुरु 05/06/2136
चंद्र 29/04/2094	मंगल 24/06/2109	राहु 31/03/2117	गुरु 20/09/2126	शनि 12/04/2139
मंगल 29/06/2095	राहु 19/05/2110	गुरु 31/07/2118	शनि 30/10/2127	बुध 30/10/2141
राहु 29/06/2098	गुरु 07/03/2111	शनि 29/02/2120	बुध 26/10/2128	केतु 17/11/2142
गुरु 28/02/2101	शनि 17/02/2112	बुध 30/07/2121	केतु 25/03/2129	शुक्र 17/11/2145
शनि 30/04/2104	बुध 23/12/2112	केतु 28/02/2122	शुक्र 25/05/2130	सूर्य 05/04/2146
बुध 01/03/2107	केतु 30/04/2113	शुक्र 30/10/2123	सूर्य 29/09/2130	00/00/0000
केतु 30/04/2108	शुक्र 30/04/2114	सूर्य 30/04/2124	चंद्र 01/05/2131	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल राहु 3 वर्ष 1 मा 1 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

SHREE DAIVAGYA JYOTISH & VASTU

Raipur Chhattisgarh & Bikaner Rajasthan

9509496711

Pandit Bhawani Shankar Pareek

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - सूर्य 04/04/2026 11/10/2026	राहु - चंद्र 11/10/2026 11/04/2028	राहु - मंगल 11/04/2028 29/04/2029	गुरु - गुरु 29/04/2029 17/06/2031	गुरु - शनि 17/06/2031 29/12/2033
00/00/0000 00/00/0000 00/00/0000 04/04/2026	चंद्र 25/11/2026 मंगल 27/12/2026 राहु 19/03/2027 गुरु 31/05/2027	मंगल 03/05/2028 राहु 29/06/2028 गुरु 20/08/2028 शनि 19/10/2028	गुरु 11/08/2029 शनि 12/12/2029 बुध 02/04/2030 केतु 17/05/2030	शनि 11/11/2031 बुध 21/03/2032 केतु 14/05/2032 शुक्र 15/10/2032
गुरु 21/04/2026 शनि 12/06/2026 बुध 29/07/2026 केतु 17/08/2026 शुक्र 11/10/2026	शनि 26/08/2027 बुध 12/11/2027 केतु 14/12/2027 शुक्र 14/03/2028 सूर्य 11/04/2028	बुध 13/12/2028 केतु 04/01/2029 शुक्र 09/03/2029 सूर्य 28/03/2029 चंद्र 29/04/2029	शुक्र 24/09/2030 सूर्य 02/11/2030 चंद्र 06/01/2031 मंगल 20/02/2031 राहु 17/06/2031	सूर्य 30/11/2032 चंद्र 15/02/2033 मंगल 10/04/2033 राहु 27/08/2033 गुरु 29/12/2033
गुरु - बुध 29/12/2033 04/04/2036	गुरु - केतु 04/04/2036 11/03/2037	गुरु - शुक्र 11/03/2037 10/11/2039	गुरु - सूर्य 10/11/2039 29/08/2040	गुरु - चंद्र 29/08/2040 29/12/2041
बुध 25/04/2034 केतु 12/06/2034 शुक्र 28/10/2034 सूर्य 08/12/2034 चंद्र 15/02/2035 मंगल 05/04/2035 राहु 07/08/2035 गुरु 25/11/2035 शनि 04/04/2036	केतु 24/04/2036 शुक्र 20/06/2036 सूर्य 07/07/2036 चंद्र 05/08/2036 मंगल 24/08/2036 राहु 15/10/2036 गुरु 29/11/2036 शनि 22/01/2037 बुध 11/03/2037	शुक्र 21/08/2037 सूर्य 08/10/2037 चंद्र 29/12/2037 मंगल 23/02/2038 राहु 19/07/2038 गुरु 26/11/2038 शनि 30/04/2039 बुध 15/09/2039 केतु 10/11/2039	सूर्य 25/11/2039 चंद्र 19/12/2039 मंगल 05/01/2040 राहु 18/02/2040 गुरु 28/03/2040 शनि 13/05/2040 बुध 24/06/2040 केतु 11/07/2040 शुक्र 29/08/2040	चंद्र 08/10/2040 मंगल 06/11/2040 राहु 18/01/2041 गुरु 24/03/2041 शनि 09/06/2041 बुध 17/08/2041 केतु 14/09/2041 शुक्र 04/12/2041 सूर्य 29/12/2041
गुरु - मंगल 29/12/2041 04/12/2042	गुरु - राहु 04/12/2042 29/04/2045	शनि - शनि 29/04/2045 02/05/2048	शनि - बुध 02/05/2048 10/01/2051	शनि - केतु 10/01/2051 19/02/2052
मंगल 17/01/2042 राहु 10/03/2042 गुरु 24/04/2042 शनि 17/06/2042 बुध 04/08/2042 केतु 24/08/2042 शुक्र 20/10/2042 सूर्य 06/11/2042 चंद्र 04/12/2042	राहु 15/04/2043 गुरु 10/08/2043 शनि 27/12/2043 बुध 29/04/2044 केतु 19/06/2044 शुक्र 12/11/2044 सूर्य 26/12/2044 चंद्र 09/03/2045 मंगल 29/04/2045	शनि 20/10/2045 बुध 25/03/2046 केतु 28/05/2046 शुक्र 27/11/2046 सूर्य 21/01/2047 चंद्र 22/04/2047 मंगल 26/06/2047 राहु 07/12/2047 गुरु 02/05/2048	बुध 18/09/2048 केतु 14/11/2048 शुक्र 27/04/2049 सूर्य 15/06/2049 चंद्र 05/09/2049 मंगल 02/11/2049 राहु 29/03/2050 गुरु 07/08/2050 शनि 10/01/2051	केतु 03/02/2051 शुक्र 11/04/2051 सूर्य 01/05/2051 चंद्र 04/06/2051 मंगल 28/06/2051 राहु 27/08/2051 गुरु 20/10/2051 शनि 23/12/2051 बुध 19/02/2052

SHREE DAIVAGYA JYOTISH & VASTU

Raipur Chhattisgarh & Bikaner Rajasthan

9509496711

Pandit Bhawani Shankar Pareek

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

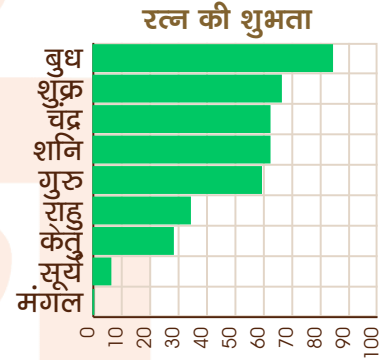
मूलांक	4
भाग्यांक	9
मित्र अंक	1, 4, 6, 9
शत्रु अंक	3, 7, 8
शुभ वर्ष	22,31,40,49,58
शुभ दिन	बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र
मित्र राशि	मकर, मिथुन
मित्र लग्न	धनु, वृष, कर्क
अनुकूल देवता	लक्ष्मी
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	84%	शत्रु व रोग मुक्ति, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
हीरा	शुक्र	66%	दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय, धन
मोती	चंद्र	62%	धन, धनार्जन
नीलम	शनि	62%	दम्पति, सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति
पुखराज	गुरु	59%	व्यावसायिक उन्नति, सुख, दम्पति
गोमेद	राहु	34%	शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट
लहसुनिया	केतु	28%	व्यय, दाम्पत्य कष्ट
माणिक्य	सूर्य	6%	दाम्पत्य कष्ट, व्यय
मूंगा	मंगल	0%	दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना, पराक्रम हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
राहु	29/04/2029	0%	50%	0%	84%	59%	72%	69%	55%	3%
गुरु	29/04/2045	19%	69%	0%	72%	72%	53%	62%	34%	28%
शनि	29/04/2064	0%	50%	0%	91%	59%	72%	75%	47%	3%
बुध	29/04/2081	19%	50%	0%	97%	59%	72%	62%	34%	28%
केतु	29/04/2088	0%	50%	0%	84%	59%	72%	50%	9%	52%
शुक्र	30/04/2108	0%	50%	0%	91%	59%	78%	69%	47%	41%
सूर्य	30/04/2114	31%	69%	0%	84%	66%	53%	50%	9%	3%
चंद्र	30/04/2124	19%	75%	0%	91%	59%	66%	62%	9%	3%
मंगल	01/05/2131	19%	69%	0%	72%	66%	66%	62%	9%	41%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052 -----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	30/08/2068-04/11/2070 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/01/2079-12/04/2081 03/08/2081-07/01/2082 -----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	18/07/2088-31/10/2088 05/04/2089-19/09/2090 25/10/2090-21/05/2091
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/10/2097-02/05/2098 20/06/2098-26/12/2099 17/03/2100-16/09/2100
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	26/12/2099-17/03/2100 16/09/2100-03/12/2102 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	03/12/2102-29/11/2105 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/02/2108-29/07/2108 23/11/2108-17/02/2111 -----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	भाग्योदय
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	सम	स्वास्थ्य
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	धन
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	सम	पराक्रम हानि
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	सन्तति सुख

SHREE DAIVAGYA JYOTISH & VASTU

Raipur Chhattisgarh & Bikaner Rajasthan

9509496711

Pandit Bhawani Shankar Pareek

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति सप्तम भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं चूंकि आपका मांगलिक दोष भंग नहीं हो रहा है। अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। साथ ही स्वभाव से ही उनमें उग्रता रहेगी। यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं लेकिन यह अल्प समय के लिए होगा तथा दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। साथ ही आप भी यदा कदा पित या गर्मी आदि से परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं। मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह कार्य में विलम्ब होने की संभावना रहेगी तथा विवाह से पूर्व वार्ताओं में भी गतिरोध रहेगा लेकिन अंत में आप को सफलता अवश्य प्राप्त होगी तथा सामान्य रूप से दाम्पत्य जीवन में प्रसन्नता बनी रहेगी।

सप्तम भावस्थ मंगल के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा पित जन्म दोषों से आपको परेशानी हो सकती है। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से कार्य क्षेत्र में आप परिश्रम एवं पराक्रम से इच्छित सफलता अर्जित करेंगे। समाज से भी न्यूनाधिक मान सम्मान की प्राप्ति होती रहेगी। लग्न पर दृष्टि के प्रभाव से स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा। यदा कदा मानसिक अशान्ति की भी अनुभूति हो सकती है। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद उत्पन्न होंगे जिससे परिवार की शान्ति प्रभावित होगी लेकिन इसका दुष्प्रभाव अल्प मात्रा में ही रहेगा।

अतः अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं सम्पन्न बनाने के लिए आपको किसी ऐसे मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम,

अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इससे आपके सुख सौभाग्य एवं ऐश्वर्य में वृद्धि होगी तथा सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा। आपसी संबंधों में भी मधुरता तथा सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।



SHREE DAIVAGYA JYOTISH & VASTU

Raipur Chhattisgarh & Bikaner Rajasthan

9509496711

Pandit Bhawani Shankar Pareek

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में महापद्म नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप जातक को प्रेम प्रसंग में प्रायः सफलता हस्तगत नहीं होती है। गृहस्थी जीवन सामान्य होते हुए भी आंशिक रूप से तनाव ग्रस्त हो जाता है। स्त्री मनोनकूल नहीं मिलती है। जातक के शरीर में समय-समय पर थोड़ा बहुत रोग व्याधि घेर लेती है। जातक को मानसिक परेशानियाँ भी लग जाती हैं और मन थोड़ा बहुत अशान्त रहता है। जीवन में शोक दुःख थोड़ा बहुत आता रहता है और मन में कभी-कभी निराशा की भावना जागृत हो जाती है। आत्मबल कमजोर रहता है। जातक यात्राएँ अधिक करता है पर सफलता आंशिक रूप में मिलती है। शत्रुगण समय-समय पर षडयन्त्र रचते रहते हैं। जिस कारण जातक को आंशिक रूप से नुकसान उठाना पड़ता है। जातक धर्मादि कार्य में विशेष रुचि नहीं रखता है और धर्म की आंशिक क्षति होती है।

इस योग के कारण जातक का स्वयं का चरित्र प्रायः सन्देहास्पद हो जाता है और राजदण्डादि का भय बना रहता है। इस योग से प्रभावित व्यक्ति को यदि सम्भव हो तो थल सेना में नहीं जाना चाहिए। समय-समय पर जातक बुरा स्वप्न भी देखता है। जिसमें सर्पादि भय होता रहता है। आर्थिक स्थिति सामान्य होती है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक अच्छी दलील देने वाला एवं वकालत तथा राजनीति के क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने वाला होता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- लग्नेश षष्ठ भाव में स्थित है और उस पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में बुध के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



ग्रह फल

सूर्य

सप्तम भाव में सूर्य हो तो जातक चिन्तायुक्त राज्य से अपमानित, आत्मरत, कठोर, स्वाभिमानी एवं विवाहित जीवन दुःखी होता है।

मीन राशि में रवि हो तो जातक बुद्धिमान्, यशस्वी, व्यापारी, विवेकी ज्ञानी, योगी, प्रेमी, गुप्त विद्याओं में रुचि रखने वाला और स्वसुर से लाभन्वित होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं शारीरिक कष्ट की अनुभूति नहीं होगी। उनकी आयु भी लम्बी होगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। विविध प्रकार से धनार्जन करने में वे सफल रहेंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना हार्दिक सहयोग देते रहेंगे। साथ ही आपके विवाह सम्पन्न करने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा एवं आप उनके विश्वास पात्र भी रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता है। फिर भी आप नित्य उनकी सेवा तथा वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

द्वितीयभाव में चन्द्रमा हो तो जातक परदेशवासी, भोगी, सुन्दर मधुरभाषी, भाग्यवान्, सहनशील एवं शान्तिप्रिय होता है।

तुला राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दीर्घदेही, आस्तिक, अन्नदाता, धनवान्, जमींदार, कुशाबुद्धिवाला, चतुर, उच्चाकांक्षाओं से रहित, सन्तोषी एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं कोई विशेष शारीरिक रुग्णता नहीं रहेगी। वे आपको हमेशा धनार्जन एवं विद्याध्ययन संबंधी कार्यों में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आपकी पारिवारिक उन्नति एवं पालन करने में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी यदा कदा वे आपको नैतिक शिक्षा भी देंगी तथा आपके प्रति उनके हृदय में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। इसके साथ ही जीवन में कई महत्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि आप उनके सहयोग से ही करेंगे।

आप की भी माता के प्रति हार्दिक श्रद्धा रहेगी एवं उनकी आज्ञा पालन करने में आप गौरव की अनुभूति करेंगे। साथ ही जीवन में सर्वप्रकार से उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करते रहेंगे। अतः आपकी परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं जीवन में एक दूसरों की सहायता एवं सहयोग का आदान प्रदान

करके सुखानुभूति करेंगे।

मंगल

सातवें भाव में मंगल हो तो जातक वातरोगी, राजभीरु, शीघ्रकोपी, कटुभाषी, स्त्रीदुःखी, धूर्त, मूर्ख, निर्धन, घातकी, धननाशक एवं ईर्ष्यालु होता है।

मीन राशि में मंगल हो तो जातक गौवरवर्ण, कामुक, आज्ञाकारी गन्दा, अस्थिर जीवन, रोगी, प्रवासी, मान्त्रीक, बन्धु-द्वेषी, नास्तिक, हठी, धूर्त और वाचाल होता है।

आपके जन्म काल में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी वे अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान की भावना व्याप्त रहेगी तथा हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह संबंधी या व्यापार संबंधी कार्यों में भी वे अपना यथाशक्ति योगदान देंगे तथा सदैव आपकी सफलता की कामना करेंगे। इसके साथ ही सुख दुःख में वे आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनको समस्त महत्वपूर्ण कार्यों एवं क्षेत्रों में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उसमें तनाव या कटुता आएगी परन्तु कुछ समय पश्चात् सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही उनकी शादी या व्यापार आदि कार्यों में भी आप उनकी वांछित सहायता करते रहेंगे।

बुध

षष्ठभावे में बुध हो तो जातक विवेकी, कलहप्रिय, वादी, रोगी, आलसी, अभिमानी, परिश्रमी, कामी, दुर्बल एवं स्त्रीप्रिय होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

गुरु

दशमभावे में गुरु हो तो जातक सुकर्म करने वाला, प्रसिद्ध और सम्मानित प्रतिष्ठित पद पर आसीन, सदाचारी, पुण्यात्मा, ऐश्वर्यवान्, साधु, चतुर, न्यायी, प्रसन्न, ज्योतिषी, सत्यवादी, शत्रुहन्ता, राजमान्य, स्वतन्त्र विचारक, मातृपितृ भक्त, लाभवान्, धनी एवं भाग्यवान् होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान्, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

शुक्र

अष्टम भाव में शुक्र हो तो जातक ज्योतिषी, क्रोधी, मनस्वी, दुखी, गुप्तरोगी, पर्यटनशील, परस्त्रीरत, विदेशवासी, निर्दयी, गुप्तविद्याओं के प्रतिरुचि एवं रोगी होता है।

मेष राशि में शुक्र हो तो जातक स्वप्न जगत में विचारने वाला, आवेशपूर्ण स्वभाव, अस्थिरमन, दुःखी, बुद्धिमान्, आरामतलब, दुराचारी, परस्त्रीरत, झगड़ालू विश्वास हीन एवं अधिक खर्च करने वाला होता है।

शनि

सप्तम भाव में शनि हो तो जातक क्रोधी, कामी, विलासी, अविवाहित रहना या दुःखी विवाहित जीवन, धन सुखहीन, भ्रमणशील, नीचकर्मरत, स्त्रीभक्त एवं आलसी होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

षष्ठभाव में राहु हो तो जातक शत्रुहन्ता, कमरदर्द पीड़ित, अरिष्टनिवारक, विदेशियों से लाभ, पराक्रमी, बड़े-बड़े कार्य करनेवाला, दीर्घायु, साहसी, धनी एवं प्रसिद्ध होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

बारहवें भाव में केतु हो तो जातक चंचल बुद्धि, धूर्त, ढग तांत्रिक, अतव्ययी निर्बल स्वास्थ्य, पागलपन, मोक्ष प्राप्ति, अविश्वासी एवं जनता को भूत-प्रेतों की जानकारी द्वारा ढगने वाला होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु
(04/04/2026 - 29/04/2029)

राहु की महादशा 04/04/2026 को आरम्भ और 29/04/2029 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु षष्ठम भावम में स्थित है। राहु की दृष्टि बारहवें भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगलदशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको मामूली स्वास्थ्य-समस्या, छोटी यात्रा तथा अचानक परिवर्तन ओर छोटे भाई-बहनों से लाभ मिला होगा। राहु की इस दशा में आपको विरोधियों पर विजय, नौकरी में लाभ और स्वास्थ्य संबंधी कुछ समस्याएं होंगी।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। किन्तु किसी अन्तर्दशा में स्वास्थ्य संबंधी कुछ मामूली समस्या हो सकती है। मौसम में परिवर्तन के फलस्वरूप वातरोग, संक्रामक रोग, चर्मरोग, रक्त की समस्या, स्नायविक दुर्बलता आदि से ग्रसित हो सकते हैं। आप जीवन में सन्तुलन अपनाकर उत्तम स्वास्थ्य का आनन्द लेंगे।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ होगी। आपको हर प्रकार का लाभ मिलेगा। आपको शत्रु और विरोधियों पर विजय और उनसे लाभ मिलेगा। सट्टे में भी लाभ हो सकता है। निवेश लाभदायक सिद्ध होगा। अदालती मामले मुकदमे में फैसला आपके हक में होगा। बारहवें भाव पर राहु की दृष्टि के फलस्वरूप कुछ व्यय होगा। इसलिए उचित आर्थिक प्रबन्धन की आवश्यकता है। जीविका और व्यवसाय के लिए विज्ञान, विमान-उड्डयन, कम्प्यूटर-प्रोग्रामिंग, दवा, यातायात, ज्योतिष, रेडियोग्राफी आदि का चयन कर सकते हैं। रसायन, इग्स, एण्टीबायोटिक्स, चमड़े के सामान, कम्प्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। सेवारत लोगों को लाभ, शत्रुओं पर विजय, सम्मान तथा सहयोगियों और वरिष्ठ कर्मचारियों का सद्भाव मिलेगा। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों के लाभ में वृद्धि और व्यापार का विस्तार होगा। आपके व्यवसाय और जीवन-वृत्ति में अच्छी प्रगति होगी।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

आप अपने आवास में परिवर्तन कर सकते हैं। आपको वाहन का सुख मिलेगा। आप जमीन-जायदाद की खरीद-बिक्री करेंगे। इस दशा के दौरान और खासकर मंगल की अन्तर्दशा के दौरान अक्सर छोटी यात्राएं होंगी। सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान दूर की यात्रा की सम्भावना है।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप सभी परीक्षाओं और प्रतिस्पर्धाओं में सफल होंगे। आप को शत्रुओं पर विजय मिलेगी। विज्ञान, दवा, विमान इंजीनियरिंग और सभी

बौद्धिक-कार्यों में आपकी रुचि होगी। राहु शनि की राशि में स्थित है, इसलिए आप गम्भीर विषयों के अध्ययन में रुचि लेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चों को लाभ तथा कुछ परिवर्तन होगा। उन्हें आपकी सहायता व मार्गदर्शन की जरूरत होगी। आपके जीवन साथी की अवांछित यात्रा, व्यय तथा कुछ स्वास्थ्य समस्या होगी। परिवार के साथ मधुर सम्बन्ध बनाए रखने के लिए आपको व्यवहार-कौशल तथा धैर्य से काम लेना होगा। आपकी माता की छोटी यात्रा होगी, संबंधियों से सहायता तथा सुख की प्राप्ति तथा स्वास्थ्य उत्तम होगा जबकि आपके पिता का तीर्थाटन होगा और सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों की जमीन-जायदाद में वृद्धि, सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति तथा जीविका में उन्नति होगी जबकि बड़े भाई-बहनों का कुछ परिवर्तन, अचानक लाभ तथा अप्रत्याशित विकास होगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के कारण आपकी विरोधियों पर विजय और मामूली स्वास्थ्य-समस्या होगी। गुरु की अन्तर्दशा में जमीन-जायदाद में वृद्धि, व्यापार में लाभ तथा शादी होगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान उत्तम शिक्षा तथा बच्चों से सुख मिलेगा किन्तु, कुछ बाधा आ सकती है। बुध की अन्तर्दशा में यश, ख्याति, सफलता ओर सम्पत्ति की प्राप्ति होगी जबकि केतु की अन्तर्दशा में कुछ समस्या उत्पन्न हो सकती है। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान यात्रा, सम्पत्ति तथा समृद्धि होगी। सूर्य की अन्तर्दशा में व्यय तथा दूर की यात्रा होगी। चन्द्र के फलस्वरूप हर प्रकार का लाभ मिलेगा जबकि मंगल अन्तर्दशा के दौरान छोटी यात्रा, स्वास्थ्य संबंधी मामूली समस्या ओर परिवर्तन होगा।

अंतर्दशा :- राहु - सूर्य
(04/04/2026 - 11/10/2026)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 04/04/2026 को प्रारंभ होकर 29/04/2029 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 10 मास 24 दिन की होगी जो आपके लिए 04/04/2026 को प्रारंभ होकर 11/10/2026 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। सूर्य शक्तिशाली ग्रह है। सप्तम भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के लग्न पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप सरकारी अधिकारियों के कोप के कारण अपमानित हो सकते हैं। यात्राओं के शौकीन होंगे। चरित्र में गिरावट आ सकती है। विपरीत लिंग के व्यक्तियों से संपर्क के कारण बदनामी हो सकती है। प्रत्येक के साथ आप न्याय और बराबरी का व्यवहार करना पसंद करेंगे। इस कारण मित्रों की संख्या में कमी आ सकती है। दुर्घटना या चोट से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए 5 7 रत्ती का माणिक सोने या चांदी की अंगूठी में रविवार के दिन प्रातःकाल, सूर्य नमस्कार करते हुए सूर्य की उपासना के बाद दायें हाथ की अनामिका में धारण करें।

अंतर्दशा :- राहु - चन्द्र
(11/10/2026 - 11/04/2028)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 04/04/2026 को प्रारंभ होकर 29/04/2029 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्रमा की अंतर्दशा 1 वर्ष 6 मास की होगी जो आपके लिए 11/10/2026 को प्रारंभ होकर 11/04/2028 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है। द्वितीय भाव में स्थित होकर चंद्रमा आपकी कुंडली के अष्टम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप सुरुचिपूर्ण, शिष्ट और प्रसन्नचित्त होंगे, कार्य/व्यापार और समाज में सफल रहेंगे। भाग्य साथ देगा, धनी बनेंगे। विपरीत लिंग के व्यक्ति आपकी ओर प्रभावित होंगे मगर वे आप पर हावी हो सकते हैं। इस संबंध में सावधानी आवश्यक है।

शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्रमा के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें।

चंद्रमा को चंद्र उदय के समय मंत्रोच्चार करते हुए कच्चा दूध अर्पित करें।

**महादशा :- गुरु
(29/04/2029 - 29/04/2045)**

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 29/04/2029 को आरम्भ और 29/04/2045 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु दशम भाव में स्थित है तथा दशम भाव सम्मान, नाम और यश आचरण पद और प्रतिष्ठा, लक्ष्य और अधिकार, कर्तव्य, उन्नति, धार्मिक उत्सव, उच्च पद, धर्म स्थलों की यात्रा, राज सम्मान, और वस्तुओं का द्योतक है।

गुरु स्वभावतः

एक शुभ ग्रह है तथा द्वितीय, चतुर्थ तथा दशम भावों को देख रहा है और इन भावों पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। सोलह साल की यह अवधि आपके लिए आनन्द और समृद्धि की होगी।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी गुरु दशम भाव में स्थित है तथा द्वितीय भाव और चतुर्थ भाव के अतिरिक्त षष्ठ भाव (शत्रु तथा रोग भाव) को देख रहा है जिसके फलस्वरूप आपके साथ तो कोई रोग या दुर्घटना नहीं होगी।

अर्थ-संपत्ति :

गुरु दशम भाव में स्थित है और प्रतिष्ठा और सम्मान के भाव को बली कर रहा है।

दशम भाव से, जो एक केंद्र है, इसकी दृष्टि द्वितीय अर्थात् धनभाव पर (चतुर्थ तथा षष्ठ भाव के अतिरिक्त) है जिसके फलस्वरूप आपको चल तथा अचल संपत्ति अर्जित करने का पूर्ण अवसर इस दशा काल में मिलेगा। आप भोग-विलास की वस्तुएं खरीदेंगे।

व्यवसाय :

गुरु दशम भाव में स्थित है और उसको बली कर रहा है। आप, जो कुछ शुरू करेंगे, उसमें सफल होंगे।

आपको नाम और यश की प्राप्ति होगी। नौकरी में पदोन्नति होगी और आपको आदर और सम्मान मिलेगा।

पारिवारिक जीवन :

एक केन्द्र दशम भाव से गुरु की दृष्टि दूसरे केन्द्र चतुर्थ भाव अर्थात् सुख-स्थान पर है जिसके फलस्वरूप आपका पारिवारिक जीवन सुखी तथा उत्साहपूर्ण होगा। आपके जीवन साथी भी आपका पूर्ण सहयोग करेंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

आप ज्ञान की खोज को जारी रखेंगे और आपकी रुचि साहित्य और पुराणों के अध्ययन की ओर होगी।

**अंतर्दशा :- गुरु - गुरु
(29/04/2029 - 17/06/2031)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 29/04/2029 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 1 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 29/04/2029 को प्रारंभ होकर 17/06/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, उच्चज्ञान, जीवन और धन का कारक है।

इस अवधि में आपका सम्मान बढ़ेगा। प्रोन्नति, सफलता, धनी होने का योग है। सुख के साधन और वाहन आदि उपलब्ध रहेंगे। अचल संपत्ति प्राप्त हो सकती है। भूमि आदि से आय में वृद्धि होगी। निवास में परिवर्तन के लिए समय उपयुक्त है। उत्तम वस्त्र और भोजन उपलब्ध होंगे। अच्छी नौकरी मिल सकती है। मामापक्ष के लोगों से लाभ होगा। बेहतर रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे। आपके जीवनसाथी अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। आपके पिता को कई माध्यमों से धनलाभ होगा। माता की यात्राएं होंगी; घरेलू जीवन सुखी रहेगा। आपके भाई-बहनों के लिए अप्रत्याशित धनलाभ, यात्रा और अध्यात्म में रुचि का संकेत है।

आपकी संतान स्पर्धियों पर विजय प्राप्त करेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो रोजगार के सुअवसर मिलेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे, साख बढ़ेगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता सफल और धनी बनेंगे। व्यापारियों को निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें।

ॐ बृं बृहस्पतये नमः